दैनिक भास्कर
22-Sep-2019
बीकानेर Page 12

को कोतवाली थाने में मामला दर्ज करवाया है। भी परेशानी आएगी।

लोक के 3 दुश्मन- कुर्सी, कालाधन व क्रूर माफिया : चारण

सांस्कृतिक संवाददाता | उदयपुर

राजस्थानी लोक में अपनी तरह की बौद्धिकता है। यह परंपरा से मजबूत हुई है। लोग भले अनपढ़ हों, लेकिन इन्हें ग्रामीण और अनपढ़ मानना अत्याचार है। इनका ज्ञान अपनी तरह का है। लोक आंखन देखी का सच है और कथित बौद्धिक और पढ़ा-लिखा समाज कागद की लेखी की बात करता है। विभिन्न वक्ताओं के भाषणों का यह सारांश शनिवार को यहां लोक कला मंडल में लोक साहित्य परंपरा और विकास संगोष्ठी में रहा।

कबीर-तुलसी इसलिए प्रासंगिक : भानु भारती

मुख्य अतिथि भानु भारती ने जितने भी लोक नाट्य हैं, वे आज भी लोगों के मन-मानस में बसे हैं। भले उदयपुर की गवरी हो या बीकानेर की रम्मतें, जोधपुर के कुचामणी ख़याल हों या अलवर-भरतपुर के अली बख्शी ख़याल हों, इनकी प्रासंगिकता आज भी है। चाहे इनके कथानक में आधुनिकता ला दी गई हो। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. सोहनदान चारण ने की। केंद्रीय साहित्य अकादमी के राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक मधु आचार्य ने बीज वक्तव्य में कहा, शास्त्र विवाद का विषय है और लोक साहित्य संवाद का। उन्होंने राजस्थानी की बातपोशी की परंपराओं के उदाहरण देकर बताया कि किस तरह विजयदान देथा जैसे साहित्यकार ने निरक्षर कहे जाने वाले लोगों के कंठ की बात को कलम से किताब में उतार कर नोबेल पुरस्कार तक के लिए नामांकित होने का श्रेय पाया।

पत्रवाचन के पहले सत्र में डॉ. शारदा कृष्ण की अध्यक्षता में डॉ. ज्योति पुंज ने परंपरा के प्रवाह में लोक साहित्य के बदलते हुए रूप पर विचार जताए। लोक साहित्य की प्रासंगिकता और गिरधारीदान रत्नू ने सांस्कृतिक अध्ययन में लोक साहित्य की भूमिका विषय पर पत्रवाचन किए। दूसरे सत्र में विश्वामित्र दाधीच की अध्यक्षता में सुरेश सालवी ने लोक साहित्य की लुप्त होती धाराएं, बुलाकी शर्मा ने मौखिक से लिखित साहित्य की यात्रा में लोक साहित्य का अवदान और राजेश कुमार व्यास ने वाचिक परंपरा और लोक साहित्य पर पत्र वाचन किए। अकादमी के सचिव के. श्रीनिवास राव ने जानकारी दी कि आकाशवाणी में रिकॉर्डेड लोक गीतों को अकादमी लिपिबद्ध कर प्रकाशित करने जा रही है।

दैनिक भास्कर

23-Sep-2019
बीकानेर Page 12

शूर सैनी मां की बेटियां हैं पंजाबी और राजस्थानी भाषा : भूपेंद्र सिंह

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

गंगानगर के साहित्यकार भूपेंद्र सिंह का कहना है कि पंजाबी और राजस्थानी भाषा शूर सैनी मां की दो बेटियां है, इसलिए समानता स्वाभाविक है। गुरु ग्रंथ साहिब के म्हारा, थ्हारा, नेड़े जैसे शब्द दोनों भाषाओं में समान हैं। राजस्थानी के पेपर में कहीं भी आप अटकें तो निसंकोच पंजाबी का शब्द लिखें, वो सही ही होगा।

भूपेंद्र सिंह रविवार को लोक कला मंडल में लोक साहित्य, परंपरा और विकास विषयक संगोष्ठी के समापन को संबोधित कर रहे थे। हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू और राजस्थानी में एमए कर चुके सिंह ने कहा, ये भ्रांति है कि केवल राजस्थान में ही तय दूरी पर बोलियों में विभिन्नताएं हैं। हर अंचल में चंद किलोमीटर के बाद बोली में बदलाव आता है। यहां जैसे मेवाड़ी, मारवाड़ी, हाड़ौती, बीकानेरी, बांगड़ी, शेखावटी, खेराड़ी, देवड़ावाटी हैं, वैसे ही पंजाब में भी माल्वा, माझा, पूर्वांध जैसी कई बोलियां हैं। इस भ्रांति के कारण ही राजस्थानी भाषा को दर्जा नही मिल पाया है। सिंह बोले, मैं पंजाबी हूं लेकिन राजस्थानी बोली की मिठास ने हमेशा मुझे आकर्षित किया है। संगोष्ठी के तीसरे सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलाल मोहता ने कहा कि लोक कलाएं कभी विलुप्त नहीं हो सकती है। पृथ्वी पर जब तक मानव जीवन है, लोक एवं लोक साहित्य विद्यमान रहेगा। आज आधुनिक और तकनीकी परिवर्तन से लोक साहित्य और परम्पराओं के परिवर्तनों को समझने की आवश्यकता है। चौथे सत्र की अध्यक्षता में भंवरसिंह सामौर ने की। उन्होंने कहा कि आज इतिहास में लोक देवताओं के योगदान को इसलिए बार-बार बताया जाता है, क्योंकि उन्होंने सदैव लोक हित के कार्य किए। लुप्त परंपरा और लोक साहित्य के ह्रास में वर्तमान शिक्षा प्रणाली का हाथ है। पत्रवाचन के तीसरे सत्र में जितेंद्र निर्मोही ने कहा कि विभिन्न अवसरों पर लोक गीतों को गाया जाता था, परंतु मौजूदा दौर में शादी-ब्याह के अवसर पर लोग पैसे देकर लोक गीत गाने वाले बुलाते हैं। लोक कथाओं और आधुनिक कहानियों में अंतर्संबंध पर अम्बिका दत्त ने इन्हें प्रत्यक्ष जीवन की रचनाकार बताया। निदेशक डॉ. लईक हुसैन ने समापन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि राजस्थान में लोक साहित्य के विकास पर शोध और अध्ययन की आवश्यकता है। केंद्रीय साहित्य अकादमी के परामर्श मंडल संयोजक मधु आचार्य ने कहा कि दो दिवसीय संगोष्ठी की सफलता का श्रेय संभागी साहित्यकारों को है। इस संगोष्ठी में पढ़े गए शोध पत्रों को अकादमी के सहयोग से प्रकाशित भी कराया जाएगा। दूसरे सत्र के समापन के बाद जोधपुर की युवा कवयित्री उज्ज्वल तिवारी के काव्य संग्रह 'सब दृश्य' का विमोचन हुआ।

दैनिक भास्कर

22-Sep-2019
उदयपुर Page 4

उदयपुर, रविवार 22 सितंबर, 2019

लोक साहित्य संगोष्ठी • फ्यूजन के नाम पर कन्फ्यूजन अधिक हो रहा; लोक साहित्य के सच्चे सौंदर्य को नष्ट कर रही है कुलालची व्यावसायिक वृत्ति

आज लोक के तीन बड़े दुश्मन- कुर्सी, कालाधन और क्रूर माफिया : सोहनदान चारण

लोक कला मंडल में लोक साहित्य परंपरा और विकास संगोष्ठी में जुटे जाने-माने साहित्यकार, भानु भारती बोले- कबीर-तुलसी आज भी प्रासंगिक

सांस्कृतिक संवाददाता | उदयपुर

राजस्थानी लोक में अपनी तरह की बौद्धिकता है। यह परंपरा से मजबूत हुई है। लोग भले अनपढ़ हों, लेकिन इन्हें ग्रामीण और अनपढ़ मानना अत्याचार है। इनका ज्ञान अपनी तरह का है। लोक आंखन देखी का सच है और कथित बौद्धिक और पढ़ा-लिखा समाज कागद की लेखी की बात करता है। विभिन्न वक्ताओं के भाषणों का यह सारांश शनिवार को यहां लोक कला मंडल में लोक साहित्य परंपरा और विकास संगोष्ठी में रहा।

मुख्य अतिथि भानु भारती ने कहा कि तुलसी और कबीर का साहित्य आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि उसमें लोक का सच बसता है। सच ही लोक में शाश्वत रहता है। जितने भी लोक नाट्य हैं, वे आज भी लोगों के मन-मानस में बसे हैं। इनके कथानक में चाहे आधुनिकता ला दी गई हो। भले उदयपुर की गवरी हो या बीकानेर की रम्मतें, जोधपुर के कुचामणी ख्याल हो या अलवर-भरतपुर के अली बख्शी ख्याल, इनकी प्रासंगिकता आज भी है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. सोहनदान चारण ने की। वे बोले, लोक साहित्य इतिहास की तरह शिलालेखों का साहित्य नहीं, मिट्टी की गंध से महकता और संवेदनाओं से सरस लोक सृजन है। आज लोक के तीन बड़े दुश्मन हैं- कुर्सी, कालाधन और क्रूर माफिया। इसके अलावा फ्यूजन के नाम पर कन्फ्यूजन अधिक हो रहा है। इस दौर में व्यावसायिक वृत्ति वाले लोग लोक साहित्य के सच्चे सौंदर्य को नष्ट करने पर आमादा हैं। केंद्रीय साहित्य अकादमी के राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक मधु आचार्य ने बीज वक्तव्य में कहा, शास्त्र विवाद का विषय है और लोक साहित्य संवाद का। उन्होंने राजस्थानी की बातपोशी की परंपराओं के उदाहरण देकर बताया कि किस तरह विजयदान देथा जैसे साहित्यकार ने निरक्षर कहे जाने वाले लोगों के कंठ की बात को कलम से किताब में उतार कर नोबेल पुरस्कार तक के लिए नामांकित होने का श्रेय पाया।

पत्रवाचन के पहले सत्र में डॉ. शारदा कृष्ण की अध्यक्षता में डॉ. ज्योति पुंज ने परंपरा के प्रवाह में लोक साहित्य के बदलते हुए रूप पर विचार जताए। हरीश बी. शर्मा ने आधुनिक युग में लोक साहित्य की प्रासंगिकता और गिरधारीदान रत्नू ने सांस्कृतिक अध्ययन में लोक साहित्य की भूमिका विषय पर पत्रवाचन किए। दूसरे सत्र में विश्वामित्र दाधीच की अध्यक्षता में सुरेश सालवी ने लोक साहित्य की लुप्त होती धाराएं, बुलाकी शर्मा ने मौखिक से लिखित साहित्य की यात्रा में लोक साहित्य का अवदान और राजेश कुमार व्यास ने वाचिक परंपरा और लोक साहित्य पर पत्र वाचन किए। अकादमी के सचिव के. श्रीनिवास राव ने स्वागत भाषण में कहा कि आज व्यक्तियों और समाजों में समस्याओं का हल लोक साहित्य में आसानी से है। इसीलिए लोक का संरक्षण, संवर्धन और विकास जरूरी है। उन्होंने जानकारी दी कि आकाशवाणी में रिकॉर्डेड लोक गीतों को अकादमी लिपिबद्ध कर प्रकाशित करने जा रही है। राजस्थानी लोक साहित्य की यह संगोष्ठी इतनी बेहतर रही है कि अब ऐसे कार्यक्रम सभी भाषाओं में करवाना जरूरी है। धन्यवाद ज्ञापन प्रो. लईक हुसैन ने किया।

दैनिक भास्कर

23-Sep-2019
उदयपुर Page 4

उदयपुर, सोमवार 23 सितंबर, 2019

संगोष्ठी • लोक साहित्य परंपरा और विकास विषयक संगोष्ठी के समापन पर बोले पंजाबी भाषी राजस्थानी साहित्यकार

शूर सैनी मां की बेटियां हैं पंजाबी और राजस्थानी : भूपेंद्र सिंह

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

वे हैं तो सिख और पंजाबी भाषी, लेकिन साहित्यकार हैं राजस्थानी के। ये हैं गंगानगर के भूपेंद्र सिंह, जिनका कहना है कि पंजाबी और राजस्थानी शूर सैनी मां की दो बेटियां हैं, इसलिए समानता स्वाभाविक है। गुरु ग्रंथ साहिब के म्हारा, थ्हारा, नेड़े जैसे शब्द दोनों भाषाओं में समान हैं। राजस्थानी के पेपर में आप कहीं भी अटकें तो निसंकोच पंजाबी का शब्द लिखें, वो सही ही होगा।

भूपेंद्र सिंह रविवार को लोक कला मंडल में लोक साहित्य, परंपरा और विकास विषयक संगोष्ठी के समापन समारोह को संबोधित कर रहे थे। हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू और राजस्थानी में एमए कर चुके सिंह ने कहा, ये भ्रांति है कि केवल राजस्थान में ही तय दूरी पर बोलियों में भिन्नता है। हर अंचल में चंद किलोमीटर के बाद बोली में बदलाव है। जैसे यहां मेवाड़ी, मारवाड़ी, हाड़ौती, बीकानेरी, बांगड़ी, शेखावटी, खेराड़ी हैं, वैसे ही पंजाब में भी मालवा, माझा, दोआबा जैसी कई बोलियां हैं। इस भ्रांति के कारण ही राजस्थानी को दर्जा नहीं मिल पाया है। संगोष्ठी के तीसरे सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलाल मोहता ने कहा कि लोक कलाएं कभी विलुप्त नहीं हो सकती है। पृथ्वी पर जब तक मानव जीवन है, लोक एवं लोक साहित्य विद्यमान रहेगा। आज आधुनिक और तकनीकी परिवर्तन से लोक साहित्य और परम्पराओं के परिवर्तनों को समझने की आवश्यकता है। समापन सत्र की अध्यक्षता निदेशक डॉ. लईक हुसैन ने की। उन्होंने कहा कि राजस्थान में लोक साहित्य के विकास पर शोध और अध्ययन की जरूरत है। केंद्रीय साहित्य अकादमी के परामर्श मंडल संयोजक वरिष्ठ साहित्यकार मधु आचार्य 'आशावादी' ने कहा कि दो दिवसीय संगोष्ठी की सफलता का श्रेय संभागी साहित्यकारों को है। इस संगोष्ठी में पढ़े शोध पत्र अकादमी के सहयोग से प्रकाशित कराएंगे। जोधपुर की युवा कवयित्री उज्ज्वल तिवारी के काव्य संग्रह 'सब दृश्य' का विमोचन हुआ।

लोक देवताओं ने लोक हित में किए थे काम, इसलिए इतिहास में बार-बार बताते हैं इनके बारे में : भंवर सिंह

चौथे सत्र की अध्यक्षता कर रहे भंवरसिंह सामौर ने कहा कि इतिहास में लोक देवताओं के योगदान को इसलिए बार-बार बताया जाता है, क्योंकि उन्होंने लोक हित के कार्य किए। लुप्त परंपरा और लोक साहित्य के ह्रास में वर्तमान शिक्षा प्रणाली का हाथ है। पत्रवाचन के तीसरे सत्र में जितेंद्र निर्मोही ने कहा कि विभिन्न अवसरों पर लोक गीत गाए जाते थे, परंतु आज शादी-ब्याह के अवसर पर लोग पैसे देकर लोक गीत गाने वाले बुलाते हैं। लोक कथाओं और आधुनिक कहानियों में अंतर्संबंध पर अम्बिका दत्त ने इन्हें प्रत्यक्ष जीवन की रचनाकार बताया।